सूरह — एक कहानी

सूरह अन-नूर

नूर

पूरा सफ़र — नूर पर नूर —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 24 • 64 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

सूरतुन अन्ज़ल्नाहा व फ़रज़्नाहा व अन्ज़ल्ना फ़ीहा आयातिम्-बय्यिनातिल्-ल'अल्लकुम तज़क्करून
1. एक सूरह जिसे हमने उतारा और फ़र्ज़ किया, और उस में वाज़ेह आयतें उतारीं ताकि तुम नसीहत लो।

व लौला इज़ समिअ्तुमूहु क़ुल्तुम मा यकूनु लना अन नतकल्लम बि-हाज़ा
16. और जब तुमने इसे सुना तो क्यों न कहा: हमारे लिए जायज़ नहीं कि हम ये बात करें।

अला तुहिब्बून अंय्यग़्फ़िरल्-लाहु लकुम
22. क्या तुम पसंद नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें बख़्श दे?

क़ुल लिल्-मुअ्मिनीन यग़ुज़्ज़ू मिन अब्सारिहिम व यह्फ़ज़ू फ़ुरूजहुम
30. मोमिन मर्दों से कहो कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्म-गाहों की हिफ़ाज़त करें।

अल्लाहु नूरुस्-समावाति वल्-अर्ज़
35. अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है।

व'अदल्-लाहुल्-लज़ीन आमनू मिन्कुम व 'अमिलुस्-सालिहाति ल-यस्तख़्लिफ़न्नहुम फ़िल्-अर्ज़
55. अल्लाह ने तुम में से उन से वादा किया जो ईमान लाए और नेक अमल किए कि उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा।

एक सूरह जो उतारी और फ़र्ज़ की गई

बेटा, ये सूरह एक ऐसे अंदाज़ में खुलती है जैसे कोई दूसरी सूरह नहीं: '**सूरतुन अन्ज़ल्नाहा व फ़रज़्नाहा व अन्ज़ल्ना फ़ीहा आयातिम्-बय्यिनातिल्-ल'अल्लकुम तज़क्करून** — एक **सूरह** जिसे **हमने उतारा और फ़र्ज़ किया**, और हमने उस में **वाज़ेह आयतें** उतारीं ताकि तुम नसीहत लो।'

बेटा, '**फ़रज़्नाहा**' — हमने उसके अहकाम लाज़िम कर दिए। बिल्कुल पहली लाइन से, ये सूरह एलान करती है कि जो आगे आता है वो नसीहत नहीं; **ये क़ानून है।** और

जो ये क़ानून बनाती है वो एक क़ीमती चीज़ की हिफ़ाज़त है: एक मुआशरे की इज़्ज़त और पाकीज़गी।

क्योंकि एक मुआशरा, बेटा, सिर्फ़ लश्करों से तबाह नहीं होता। ये तब तबाह होता है जब ख़ानदान टूटते हैं, जब लोगों के दरमियान भरोसा गिर जाता है, और जब अफ़्वाह से साख़ें तार-तार की जा सकती हैं। **ये सूरह वो दीवारें बनाती है जो इसे रोकती हैं।**

ये उन लोगों के लिए सख़्त सज़ाएँ मुक़र्रर करते हुए शुरू होती है जो ना-जायज़ क़ुर्बत के साबित-शुदा मुजरिम हों — और बेटा, एक अहम चीज़ ग़ौर कीजिए: उस जुर्म के लिए इस्लामी क़ानून में दरकार सबूत का मेयार जान-बूझ कर बेहद ऊँचा है, जिसमें ख़ुद उस फ़ेअ्ल के चार चश्म-दीद गवाह ज़रूरी हैं। उलमा ने ग़ौर किया कि इसका असर ये है कि जुर्म का साबित होना तक़रीबन ना-मुमकिन हो जाता है इलावा इसके कि वो खुले-आम और बे-शर्मी से किया जाए। **क़ानून का मक़्सद लोगों का शिकार करना नहीं; ये बे-हयाई को अवाम में आने से रोकना है।**

और उसी साँस में, अल्लाह इसके उल्टा जुर्म के ख़िलाफ़ क़ानून बनाते हैं: '**वल्-लज़ीन यर्मूनल्-मुह्सनाति सुम्म लम यअ्तू बि-अर्बअति शुहदा-अ फ़ज्लिदूहुम समानीन जल्दह** — और जो **पाक-दामन औरतों पर इल्ज़ाम** लगाएँ और फिर **चार गवाह** न लाएँ — उन्हें अस्सी कोड़े मारो — **व ला तक़्बलू लहुम शहादतन अबदा** — **और उस के बाद कभी उनकी गवाही क़ुबूल मत करो** — **व उलाइक हुमुल्-फ़ासिक़ून** — और वही ना-फ़रमान हैं।'

बेटा, देखिए अल्लाह किसी की इज़्ज़त पर हमले को कितनी संजीदगी से लेते हैं। वो शख़्स जो तोहमत लगाए और साबित न कर सके उसे सज़ा दी जाती और हमेशा के लिए गवाह के तौर पर ना-अहल कर दिया जाता है — उसकी बात पर फिर कभी भरोसा नहीं किया जाता।

ये आपको कुछ बताता है, बेटा: **अल्लाह के क़ानून में, एक साख़ कोई छोटी चीज़ नहीं जिसे गुफ़्तगू में उछाल दिया जाए।**

तुमने अच्छा क्यों न सोचा?

और अब, बेटा, सूरह एक अस्ली वाक़िए को मुख़ातिब करती है जिसने मदीना को हिला दिया — आइशा (रज़ि0), नबी ﷺ की अपनी बीवी, पर एक झूठी तोहमत जो मुनाफ़िक़ों ने फैलाई और कुछ मोमिनीन ने दोहराई जिन्हें बेहतर जानना चाहिए था।

एक महीने तक, घराना तकलीफ़ में रहा जब अफ़्वाह गर्दिश करती रही। और फिर अल्लाह ने सात आसमानों के ऊपर से उसकी बराअत नाज़िल की — एक ऐसा दिफ़ा' जो एक किताब में दर्ज है जो वक़्त के इख़्तिताम तक पढ़ी जाएगी।

'**इन्नल्-लज़ीन जाऊ बिल्-इफ़्कि 'उस्बतुम्-मिन्कुम** — बेशक, जो **लोग झूठ** ले कर आए वो **तुम में से एक गिरोह** हैं — **ला तह्सबूहु शर्रल्-लकुम बल हुव ख़ैरुल्-लकुम** — **इसे अपने लिए बुरा मत समझो; बल्कि ये तुम्हारे लिए बेहतर है।**'

बेटा, यहाँ रुकिए। एक महीने की तकलीफ़, एक ख़ानदान की इज़्ज़त पर खुले-आम हमला — और अल्लाह कहते हैं: **ये तुम्हारे लिए बेहतर है।** क्योंकि उस दर्द में से हमेशा के लिए एक क़ानून निकला जो हर मोमिन औरत की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करता है वक़्त के इख़्तिताम तक, और उसकी बराअत का एक एलान जिसे कोई कभी मिटा नहीं सकता।

बेटा, ये आयत याद रखिए जब आपके साथ कोई दर्दनाक चीज़ हो: 'ला तह्सबूहु शर्रल्-लकुम बल हुव ख़ैरुल्-लकुम'।

और फिर, बेटा, वो आयत आती है जो ये तय करे कि हम अपने फ़ोन तक पहुँचने वाली हर अफ़्वाह को कैसे सँभालें:

'**लौला इज़ समिअ्तुमूहु ज़न्नल्-मुअ्मिनून वल्-मुअ्मिनातु बि-अन्फ़ुसिहिम ख़ैरा** — **जब तुमने इसे सुना, मोमिन मर्दों और औरतों ने अपने ही लोगों के बारे में अच्छा क्यों न सोचा** — **व क़ालू हाज़ा इफ़्कुम्-मुबीन** — **और क्यों न कहा: ये एक ज़ाहिर झूठ है?**'

बेटा, एक मोमिन के बारे में अफ़्वाह पर दूसरे मोमिन का मुतवक़्क़ा जवाब पहले तहक़ीक़ नहीं — ये है '**ये ज़ाहिर तौर पर झूठ है**'। अच्छा गुमान **डिफ़ॉल्ट** है।

'व लौला इज़ समिअ्तुमूहु क़ुल्तुम मा यकूनु लना अन नतकल्लम बि-हाज़ा — और जब तुमने इसे सुना तो क्यों न कहा: हमारे लिए जायज़ नहीं कि हम ये बात करें — सुब्हानक हाज़ा बुह्तानुन 'अज़ीम — तू पाक है! ये एक बड़ी तोहमत है!'

बेटा, उस जुमले को याद कर लीजिए: 'मा यकूनु लना अन नतकल्लम बि-हाज़ा' — **हमारे लिए ये बात करना जायज़ नहीं।** वो एक लाइन, जब कोई ग़ीबत की बात आए, हमारी कम्युनिटियों में ज़्यादा तर नुक़सान रोक देगी।

'इज़ तलक़्क़ौनहू बि-अल्सिनतिकुम व तक़ूलून बि-अफ़्वाहिकुम मा लैस लकुम बिही 'इल्म — जब तुम इसे अपनी **ज़ुबानों** से ले रहे थे और अपने मुँह से वो कह रहे थे जिसका तुम्हें **कोई इल्म न था — व तह्सबूनहू हय्यिनंव्-व हुव 'इन्दल्-लाहि 'अज़ीम — और तुम इसे मामूली समझ रहे थे, जब कि वो अल्लाह के नज़दीक बड़ी (बात) थी।'**

बेटा, एक जुमले में पूरी बीमारी: '**तह्सबूनहू हय्यिनन**' — तुम इसे **कुछ नहीं** समझ रहे थे। एक आगे भेजा गया मैसेज। एक शादी में एक जुमला। एक ख़ामोशी भरने को कही गई बात। **तुम्हारी ज़ुबान पर हल्की — अल्लाह के नज़दीक बड़ी।**

और अल्लाह ख़बरदार करते हैं: '**इन्नल्-लज़ीन युहिब्बून अन तशी'अल्-फ़ाहिशतु फ़िल्-लज़ीन आमनू लहुम 'अज़ाबुन अलीमुन फ़िद्-दुन्या वल्-आख़िरह** — बेशक, जो ये **पसंद करते हैं कि बे-हयाई फैले** मोमिनीन के दरमियान, उन के लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है।'

बेटा, बारीकी ग़ौर कीजिए: जो इसे फैलने का **पसंद** करते हैं। वो नहीं जिन्होंने किया — **वो जो इसे गर्दिश करने में लुत्फ़ लेते हैं।**

चाहिए कि वो माफ़ करें और दर-गुज़र करें

और अब, बेटा, माफ़ी के बारे में क़ुरआन की सब से ख़ूबसूरत आयतों में से एक — और उसका पस-मंज़र इसे हैरत-अंगेज़ बनाता है।

अबू बक्र (रज़ि0) एक रिश्तेदार की माली मदद करते थे जो ग़रीब था — और वो रिश्तेदार उन लोगों में से था जिन्होंने अबू बक्र की अपनी बेटी के ख़िलाफ़ तोहमत

फैलाई थी। तो अबू बक्र ने क़सम खाई कि वो उस पर फिर कभी ख़र्च न करेंगे। बेटा, कौन इल्ज़ाम दे सकता है?

और अल्लाह ने नाज़िल किया: '**व ला यअ्तलि उलुल्-फ़ज़्लि मिन्कुम वस्-स'अति अंय्युअ्तू उलिल्-क़ुर्बा वल्-मसाकीन वल्-मुहाजिरीन फ़ी सबीलिल्-लाह** — और तुम में से **फ़ज़ीलत** वाले और **दौलत** वाले ये क़सम न खाएँ कि वो अपने रिश्तेदारों और मोहताजों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को न दें — **वल्-यअ्फ़ू वल्-यस्फ़हू — और चाहिए कि वो माफ़ करें और दर-गुज़र करें — अला तुहिब्बून अंय्यग़्फ़िरल्-लाहु लकुम — क्या तुम पसंद नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें बख़्श दे? वल्लाहु ग़फ़ूरुर्-रहीम।**'

बेटा, और अबू बक्र ने फ़ौरन कहा: हाँ, अल्लाह की क़सम, मैं पसंद करता हूँ कि अल्लाह मुझे बख़्श दे — और उन्होंने उस आदमी की मदद बहाल कर दी और कहा कि वो उसे फिर कभी वापस न लेंगे।

बेटा, वो दलील देखिए जो अल्लाह इस्तेमाल करते हैं। वो ये नहीं कहते 'उसे माफ़ करो क्योंकि वो इसका हक़दार है'। वो कहते हैं: **क्या तुम बख़्शे जाना नहीं चाहते?**

यही वो दाँव है। हम में से हर एक अल्लाह के सामने खड़ा इस उम्मीद में है कि उस से उन चीज़ों पर दर-गुज़र की जाए जो उन से कहीं बुरी हैं जो हम दूसरों में माफ़ करने से इनकार कर रहे हैं। बेटा, **माफ़ी मुजरिम पर एहसान नहीं — ये तुम्हारी अपनी फ़ाइल में एक सरमाया-कारी है।**

अपनी निगाहें नीची रखो

फिर सूरह मुआशरे को उस के मेल-जोल के उसूल देती है, बेटा — घरों में दाख़िल होने से पहले इजाज़त से शुरू करते हुए: '**ला तद्ख़ुलू बुयूतन ग़ैर बुयूतिकुम हत्ता तस्तअ्निसू व तुसल्लिमू 'अला अह्लिहा** — अपने घरों के इलावा दूसरों के घर में दाख़िल मत हो जब तक **इजाज़त** न माँग लो और उनके रहने वालों को **सलाम** न कर लो।'

बेटा, निजी-दायरा (प्राइवेसी) क़ानूनी बनाया गया। **एक घर एक पनाह-गाह है, और**

एक दोस्त तक बिना इत्तिला के अंदर नहीं चला आता।

और फिर वो दो आयतें जो इस्लामी हया की बुनियाद हैं — और बेटा, ग़ौर कीजिए कौन सी **पहले** आती है:

'**क़ुल लिल्-मुअ्मिनीन यग़ुज़्ज़ू मिन अब्सारिहिम व यह्फ़ज़ू फ़ुरूजहुम — मोमिन मर्दों से कहो कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्म-गाहों की हिफ़ाज़त करें — ज़ालिक अज़्का लहुम — ये उनके लिए ज़्यादा पाक है — इन्नल्-लाह ख़बीरुम्-बिमा यस्न'ऊन** — बेशक, अल्लाह उस से बा-ख़बर है जो वो करते हैं।'

बेटा, हुक्म **मर्दों** से शुरू होता है। औरतों के लिबास के बारे में कुछ कहने से पहले, मर्दों को अपनी आँखें क़ाबू करने को कहा जाता है। **वो तरतीब जान-बूझ कर है, और ये अक्सर हमारी कम्युनिटियों में भुला दी जाती है, जहाँ हया का पूरा बोझ औरतों पर रख दिया जाता है।**

और ग़ौर कीजिए 'यग़ुज़्ज़ू **मिन** अब्सारिहिम' — अपनी निगाह **से** कम करें। आँखें बंद कर के दीवारों से मत टकराओ; रोको, कम करो, नज़र फेर लो। नबी ﷺ ने अली (रज़ि0) से फ़रमाया: एक नज़र के पीछे दूसरी नज़र मत भेजो; पहली तुम्हारे लिए है, और दूसरी तुम्हारे लिए नहीं।

बेटा, **पहली नज़र इत्तेफ़ाक़ है। दूसरी चुनाव है।**

और फिर: '**व क़ुल लिल्-मुअ्मिनाति यग़्ज़ुज़्न मिन अब्सारिहिन्न व यह्फ़ज़्न फ़ुरूजहुन्न** — और मोमिन औरतों से कहो कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्म-गाहों की हिफ़ाज़त करें — **व ला युब्दीन ज़ीनतहुन्न इल्ला मा ज़हर मिन्हा** — और अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें सिवाए उस के जो उस में से ज़ाहिर हो जाए — **वल्-यज़्रिब्न बि-ख़ुमुरिहिन्न 'अला जुयूबिहिन्न** — और अपनी **ओढ़नियों** को अपने **सीनों** पर डाल लें।'

बेटा, और फिर ख़ानदान के उन अफ़राद की एक लंबी फ़ेहरिस्त जिनके सामने ये लागू नहीं — बाप, बेटे, भाई, वग़ैरह।

और पूरे निज़ाम की दी गई वजह, मर्दों की आयत में: '**ज़ालिक अज़्का लहुम**' — **ये**

उनके लिए ज़्यादा पाक है। बेटा, ग़ौर कीजिए: **उनके** लिए ज़्यादा पाक, मुआशरे की सूरत के लिए नहीं। **ये हुक्म उस शख़्स को दी गई एक हिफ़ाज़त हैं जो उनपर अमल करता है।**

और फिर एक ख़ूबसूरत हुक्म जिसे ज़्यादा तर लोग नज़र-अंदाज़ करते हैं: '**व अन्किहुल्-अयामा मिन्कुम वस्-सालिहीन मिन 'इबादिकुम व इमाइकुम** — और तुम में से **ग़ैर-शादी-शुदा** का **निकाह करवाओ** — **इंय्यकूनू फ़ुक़रा-अ युग़्निहिमुल्-लाहु मिन फ़ज़्लिह** — **अगर वो ग़रीब हों, तो अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से मालदार कर देगा।**'

बेटा, इसे देखिए। हया का हुक्म देने के ठीक बाद, अल्लाह मुआशरे को **निकाह को आसान** बनाने का हुक्म देते हैं। क्योंकि **एक मुआशरा अपने नौजवानों से पाकीज़गी का मुतालबा नहीं कर सकता जब कि निकाह को ना-मुमकिन हद तक महँगा और मुश्किल बनाए।**

और 'इंय्यकूनू फ़ुक़रा-अ युग़्निहिमुल्-लाहु मिन फ़ज़्लिह' — ग़ुर्बत का सीधा जवाब: रिज़्क़ के ख़ौफ़ से एक निकाह को मत टालो। बेटा, ये उन ख़ानदानों से कहिए जो ना-मुमकिन जहेज़ और शान-दार शादियाँ माँगते हैं जब कि नौजवान बरसों इंतेज़ार करते हैं।

नूर पर नूर

और अब, बेटा, हम उस आयत तक पहुँचे जो इस सूरह को उसका नाम देती है — पूरी वही के सब से ख़ूबसूरत हिस्सों में से एक। इसे धीरे पढ़िए।

'**अल्लाहु नूरुस्-समावाति वल्-अर्ज़** — **अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है।**'

'**मसलु नूरिही क-मिश्कातिन फ़ीहा मिस्बाह** — उसके नूर की मिसाल एक **ताक़ (दीवार का खाना)** जैसी है जिसमें एक **चिराग़** है — **अल्-मिस्बाहु फ़ी ज़ुजाजह** — चिराग़ **शीशे** में — **अज़्-ज़ुजाजतु क-अन्नहा कौकबुन दुर्रिय्य** — शीशा गोया एक **चमकता सितारा** — **यूक़दु मिन शजरतिम्-मुबारकतिन ज़ैतूनतिल्-ला शर्क़िय्यतिंव्-व ला ग़र्बिय्यह** — एक **बा-बरकत ज़ैतून के दरख़्त** (के तेल) से

जलाया गया, न **मशरिक़ी** न **मग़रिबी** — **यकादु ज़ैतुहा युज़ी-उ व लौ लम तम्सस्हु नार** — जिसका तेल तक़रीबन चमक उठे चाहे उसे आग न छुए — **नूरुन 'अला नूर** — **नूर पर नूर** — **यह्दिल्-लाहु लि-नूरिही मंय्यशा** — **अल्लाह अपने नूर की तरफ़ जिसे चाहे हिदायत देता है।'**

बेटा, इस तस्वीर को खोल कर देखिए। दीवार में एक ताक़ — ये रौशनी जमा करती और उसे बिखरने देने के बजाए आगे मुनाकिस करती है। उस के अंदर, एक चिराग़। चिराग़ के गिर्द, इतना साफ़ और चमकीला शीशा कि वो ख़ुद एक सितारे की तरह चमके। और ईंधन: एक बा-बरकत ज़ैतून के दरख़्त का तेल जो खुले में खड़ा, सारा दिन हर सिम्त से सूरज पकड़ता, इतना पाक कि लगता है कि जलाए जाने से पहले ही चमक उठे।

और नतीजा: '**नूरुन 'अला नूर**' — **नूर पर नूर।**

बेटा, उलमा ने इसे मोमिन के दिल पर लगाया। **ताक़ उसका सीना है। शीशा उसका दिल है** — और ये कितनी रौशनी देता है इसका दार-ओ-मदार इस पर है कि वो कितना **साफ़** है; एक धुँधला शीशा सब से रौशन चिराग़ को भी मद्धम कर देता है। **तेल उसकी फ़ितरत और उसका इख़्लास है**, इतनी पाक कि भलाई तक़रीबन उस से चमक उठती है उस से पहले कि कोई ता'लीम उस तक पहुँचे। और उस में जलाया गया **चिराग़ वही की हिदायत** है।

तो नूर पर नूर, बेटा: एक पाक क़ुदरती फ़ितरत का नूर, वही के नूर से मिलता हुआ।

और इसी लिए दो लोग वही एक आयत सुन सकते हैं और एक बदल जाता है जब कि दूसरे को कुछ महसूस नहीं होता। **चिराग़ वही है। शीशा नहीं।**

बेटा, तो तुम्हारा काम शीशा है: **उसे साफ़ करो। हर गुनाह एक दाग़ है; हर इस्तिग़फ़ार एक पोंछा है।**

वो घर जिन्हें अल्लाह ने बुलंद करने की इजाज़त दी

'**फ़ी बुयूतिन अज़िनल्-लाहु अन तुर्फ़'अ व युज़्कर फ़ीहस्मुहू** — **उन घरों में** जिन्हें अल्लाह ने **बुलंद करने** का हुक्म दिया और ये कि उन में उसका **नाम लिया जाए** —

युसब्बिहु लहू फ़ीहा बिल्-ग़ुदुव्वि वल्-आसाल — उन में सुब्ह-शाम उसकी तस्बीह करते हुए।'

'**रिजालुल्-ला तुल्हीहिम तिजारतुंव्-व ला बै'उन 'अन ज़िक्रिल्-लाहि व इक़ामिस्-सलाति व ईता-इज़्-ज़कात** — **ऐसे मर्द जिन्हें न तिजारत न ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र** से और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने से **ग़ाफ़िल** करती है — **यख़ाफ़ून यौमन ततक़ल्लबु फ़ीहिल्-क़ुलूबु वल्-अब्सार** — वो उस **दिन से डरते हैं जिस में दिल और आँखें उलट दी जाएँगी।**'

बेटा, ग़ौर से ग़ौर कीजिए: ये नहीं कहता जिन मर्दों का कोई कारोबार नहीं। ये कहता है जिन मर्दों को कारोबार **ग़ाफ़िल** नहीं करता। **वो तिजारत करते, ख़रीदते-बेचते, मेहनत करते हैं — और जब बुलावा आता है, वो चल देते हैं।**

बेटा, यही वो तवाज़ुन है जो इस्लाम माँगता है। **न दुनिया छोड़ना; न उस में निगल जाना।**

और फिर मुक़ाबला — उन के अमल जो इनकार करते हैं: '**वल्-लज़ीन कफ़रू अअ्मालुहुम क-सराबिम्-बि-क़ी'अतिंय्यह्सबुहुज़्-ज़म्आनु मा-अ** — और जिन्होंने कुफ़्र किया — उनके अमल एक मैदान में **सराब** जैसे हैं, जिसे **प्यासा पानी समझता** है — **हत्ता इज़ा जाअहू लम यजिद्हु शै-आ** — **यहाँ तक कि, जब वो उस तक आता है, उसे कुछ नहीं पाता।**'

बेटा, क्या तबाह-कुन तस्वीर। एक आदमी प्यास से मरता, चमकते पानी की तरफ़ दौड़ता — और सूखी रेत पर पहुँचता। **ये बिना ईमान के बनाई गई कामयाबियों की ज़िंदगी है: सारे रास्ते वो पानी लगती रही।**

'**औ क-ज़ुलुमातिन फ़ी बहिल्-लुज्जिय्य** — या एक **गहरे समंदर** में **अंधेरों** जैसे — **यग़्शाहु मौजुम्-मिन फ़ौक़िही मौजुम्-मिन फ़ौक़िही सहाब** — जिसे मौजें ढाँप लेती हैं, जिनके ऊपर मौजें, जिनके ऊपर **बादल** — **ज़ुलुमातुम्-ब'अ्ज़ुहा फ़ौक़ ब'अ्ज़** — **अंधेरे, एक दूसरे के ऊपर** — **इज़ा अख़्रज यदहू लम यकद यराहा** — **जब वो अपना हाथ निकाले, वो उसे मुश्किल से देखे** — **व मल्-लम यज्'अलिल्-लाहु लहू नूरन फ़-मा लहू मिन नूर** — **और जिसके लिए अल्लाह ने नूर न बनाया — उसके**

लिए कोई नूर नहीं।'

बेटा, अंधेरों की तहें: गहरा पानी, फिर मौजें, फिर और मौजें, फिर बादल जो सितारों को भी रोक ले। और एक आदमी अपना ही हाथ अपने चेहरे के सामने थामे और उसे देख न पाए।

ये वो है जो बिना हिदायत की ज़िंदगी अंदर से कैसी है — बुरी-महसूस नहीं, बस **अंधेरी**। कोई सिम्त नहीं, फ़ैसला करने का कोई तरीक़ा नहीं, उस चीज़ को भी देखने से क़ासिर जो तुम्हारे सब से क़रीब है।

और नतीजा क़त'ई है, बेटा: 'व मल्-लम यज्'अलिल्-लाहु लहू नूरन फ़-मा लहू मिन नूर'. **कोई मुतबादिल सरचश्मा नहीं।** तो उस से माँगो — जैसे नबी ﷺ माँगा करते थे, अपने दिल में नूर डालते, अपने कान, अपनी आँख, अपने आगे, अपने पीछे, अपने ऊपर और नीचे।

इताअत करो, और वो तुम्हें जमाएगा

फिर सूरह एक ऐसे मुआशरे को एक वादा देती है जो इसी पर जीता हो: '**व'अदल्-लाहुल्-लज़ीन आमनू मिन्कुम व 'अमिलुस्-सालिहाति ल-यस्तख़्लिफ़न्नहुम फ़िल्-अर्ज़ि** — अल्लाह ने उन से **वादा** किया जो ईमान लाए और नेक अमल किए कि **वो उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त ज़रूर देगा** — **व ल-युमक्किनन्न लहुम दीनहुमुल्-लज़िर्-तज़ा लहुम** — और वो उनके लिए उनका वो दीन ज़रूर **जमाएगा** जिसे उसने उनके लिए पसंद किया — **व ल-युबद्दिलन्नहुम मिम्-ब'अ्दि ख़ौफ़िहिम अम्ना** — **और वो उनके ख़ौफ़ के बाद उसे अमन से ज़रूर बदल देगा** — **यअ्बुदूननी ला युश्रिकून बी शै-आ** — (क्योंकि) वो मेरी इबादत करते हैं, मेरे साथ किसी को शरीक नहीं करते।'

बेटा, आख़िर में जुड़ी शर्त ग़ौर कीजिए: वो सिर्फ़ उसकी इबादत करते हैं। **ज़मीन में जमाव तौहीद और नेक अमल के पीछे आता है — उल्टा नहीं।**

और सूरह घरेलू आदाब तक सिखाती है, बेटा — ये हिदायत देती है कि बच्चे और ख़ादिम तीन निजी-दायरा के वक़्तों पर दाख़िल होने से पहले इजाज़त माँगें: फ़ज्र से

पहले, दोपहर के आराम पर, और 'इशा के बाद। बेटा, देखिए रहमत कितनी तफ़सीली है: **एक ही घराने के अंदर भी, कुछ लम्हे हैं जो एक शख़्स अकेले के हैं।**

और ये ख़त्म होती है: '**अला इन्न लिल्लाहि मा फ़िस्-समावाति वल्-अर्ज़** — ख़ूब सुनो, आसमानों और ज़मीन में जो है वो अल्लाह का है — **क़द यअ्लमु मा अन्तुम 'अलैह** — **वो जानता है तुम किस हालत पर हो** — **व यौम युर्जऊन इलैहि फ़-युनब्बिउहुम बिमा 'अमिलू** — और जिस दिन वो उसकी तरफ़ लौटाए जाएँगे, वो उन्हें बताएगा जो उन्होंने किया — **वल्लाहु बि-कुल्लि शै-इन 'अलीम** — और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।'

बेटा, 'क़द यअ्लमु मा अन्तुम 'अलैह' — **वो ठीक ठीक जानता है तुम किस हालत में हो। अभी।** उन चीज़ों समेत जो तुम्हारे बारे में कोई और नहीं जानता।

और यही **नूर** की सूरह का कामिल इख़्तिताम है: **जो आसमानों और ज़मीन का नूर है वही वो ज़ात है जिसकी नज़र में तुम्हारे बारे में कुछ भी साए में नहीं।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. एक इज़्ज़त कोई छोटी चीज़ नहीं: झूठी तोहमत एक सज़ा और साख़ का मुस्तक़िल नुक़सान उठाती है।

2. अफ़्वाह पर मोमिन का डिफ़ॉल्ट जवाब 'ये ज़ाहिर तौर पर झूठ है' — अच्छा गुमान पहले आता है।

3. ये जुमला सीखो: 'हमारे लिए ये बात करना जायज़ नहीं।' जो तुम्हारी ज़ुबान पर हल्का है वो अल्लाह के नज़दीक बड़ा है।

4. माफ़ करो क्योंकि तुम बख़्शे जाना चाहते हो — 'क्या तुम पसंद नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें बख़्श दे?'

5. निगाह नीची रखने का हुक्म मर्दों से शुरू होता है — और मुआशरे को निकाह आसान बनाने का हुक्म है, महँगा नहीं।

6. चिराग़ सब के लिए एक है; फ़र्क़ शीशे की सफ़ाई का है। उसे इस्तिग़फ़ार से साफ़

करो।

7. बिना हिदायत की ज़िंदगी अंधेरे पर अंधेरा है — और उस के सिवा कोई नूर नहीं, तो उस से माँगो।

या अल्लाह, हमारे दिलों में नूर रखिए, हमारी ज़ुबानें लोगों की इज़्ज़त से बचाइए, और हमारे घरों को उन घरों में बना दीजिए जिन्हें आप ने बुलंद करने की इजाज़त दी। आमीन।